बाबा ने आबाद कर दिया

● ब्रह्माकुमार शिवेश्वर, गोरखपुर

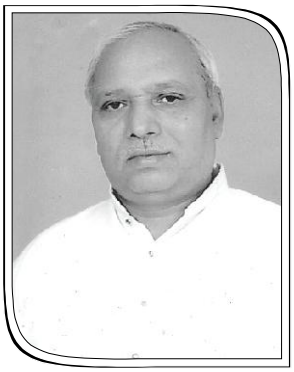

मेरे जीवन में एक भारी परीक्षा की घड़ी तब आयी जब मेरी धर्मपत्नी का सन् 1990 में देहांत हो गया। वे दो लड़कियाँ और दो लड़के पीछे छोड़ गयी। सबसे छोटा लड़का एक साल का था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि कहाँ जाऊँ, क्या करूँ, कैसे इनकी पालना करूँ। मैं पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर में कैशियर के पद पर सर्विस कर रहा था। मेरे माता-पिता दूसरी शादी के लिए दबाव डालने लगे परन्तु इन चार बच्चों को देखकर संकल्प चला कि एक सुख के लिए चार को कैसे दु:खी करूँ इसलिए परिवार वालों से कहा कि दूसरी शादी नहीं करूँगा।

अशान्ति की चरम सीमा

तनाव ज्यादा पैदा होने के कारण कैश काउंटिंग के बजाए मुझे बैंक में ड्यूटी दी गयी जहाँ प्रतिदिन की आय को बैंक में जमा करना होता था। एक दिन एक व्यक्ति 90 नोट 100-100 के (9000) लाया और बोला, मुझे 500 के नोट चाहिएँ। मैंने बाक्स खोलकर 90 नोट 500-500 के दे दिये। वह व्यक्ति दूर चला गया। एकाएक ख्याल आया कि 100 के 90 नोट यानि 9 हजार और 500 के 90 नोट यानी 45 हजार। मैं बाहर भागा, वह व्यक्ति कोने में खड़ा होकर गिनती कर रहा था। मेरी इतनी बड़ी गलती से आप समझ सकते हैं कि मैं कितना अशांत था। इसी बीच ब्रह्माकुमारी से जुड़े हुए एक रेलवे कर्मचारी से मैंने कहा, मुझे शांति चाहिए। उन्होंने कहा , ठीक है, आज शाम को ब्रह्माकुमारी आश्रम में आ जाना। वहाँ पहुँचने पर श्वेतवस्त्रधारी बहनें मिलीं, उन्हें देखता ही रह गया। बहनजी ने प्यार से बिठाकर मेरी व्यथा सुनी। फिर प्यार से मुझे कोर्स कराना शुरू कर दिया। कोर्स करते-करते मेरी समझ में आया कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, कहाँ का रहने वाला हूँ, इस संसार में क्यों आया हूँ और मेरे अविनाशी पिता कौन हैं? मैं रो रहा हूँ, किसके लिए? मात्र मिट्टी के एक पुतले के लिए। इसके बाद बाबा की याद में मगन हो गया और रात भर छत पर योग करने लगा। उस दिन से रोज़ मुरली क्लास करना भी प्रारम्भ हो गया।

बाबा के बल से निभाई व्यस्त दिनचर्या

बाबा ने इतना बल भरा कि योग करके, फिर खाना बनाकर, बाहर से दरवाजे पर ताला लगाकर सुबह ही साढ़े तीन बजे मुरली सुनने आश्रम पर चला जाता था। उस समय सब बच्चे सोये रहते थे। सेंटर से मुरली क्लास करके वापस आकर बच्चों को जगाकर, नहलाकर, नाश्ता कराकर स्कूल भेज देता था। मेरी बड़ी बेटी की पढ़ाई सुबह के समय होने के कारण वह जल्दी क्वार्टर वापस आ जाती थी। तब मैं साल भर के बच्चे को बेटी के सहारे छोड़कर ऑफिस चला जाता था। आठ घंटा ड्यूटी करने के बाद शाम 5 बजे आकर भोजन बनाता, बच्चों को खिलाता फिर आश्रम पर योग करने जाता। आश्रम से शाम साढ़े सात बजे योग करके वापस क्वार्टर आता, रात का भोजन बनाता, बच्चों को पढ़ाता, सोते समय सभी की तेल से मालिश करता और सुलाता, इस प्रकार से सारी दिनचर्या चलती रही।

हिम्मत हमारी, मदद शिवबाबा की

आस-पड़ोस के लोगों के संकल्प चलते कि शिवेश्वर भाई ब्रह्माकुमारीज़ के चक्कर में बर्बाद हो

जाएंगे और बच्चे अनाथ हो जायेंगे परन्तु बाबा ने मुझे बहुत शक्ति दी। कुछ समय बाद बड़ी बेटी की शादी कर दी। बड़े बेटे को सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनाकर सर्विस लगवाई। जीवन-यात्रा हँसी, खुशी से चलने लगी थी पर तभी दूसरी परीक्षा आ गयी। जो छोटा बेटा साल भर का था उसे 18 साल की उम्र में एकाएक फरका की बीमारी हुई। इलाज के समय डाक्टर ने दवा का ऐसा हाई डोज़ दिया कि उसका ब्रेन हेमरेज हो गया। वह चल बसा। फिर भी मैं हिम्मत नहीं हारा। बाबा की सेवा करता रहा। सन् 2011 में फिर परीक्षा आई। छोटी लड़की 17 वर्षों से सेंटर पर रहकर बाबा की सेवा कर रही थी। उसकी दोनों किडनी फेल हो गई थीं। त्रिवेंद्रम से लेकर दिल्ली तक इलाज कराने के बाद दस सितम्बर, 2011 को उसे इलाज के लिए हिमाचल प्रदेश ले जा रहा था कि रास्ते में बाबा की गोद में चली गयी। फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी और शिवबाबा की मदद मिलती रही। मैं जानता हूँ कि इस संसार में जो कोई भी आया है उसे जाना तो है ही। इस नाटकशाला में हम सब आत्मायें पार्टधारी हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि परमात्मा शिवबाबा इस धरा पर आ चुके हैं और नई दुनिया की स्थापना का कार्य करा रहे हैं। बाबा का हाथ और साथ लेकर चलते हुए आज 22 वर्ष हो रहे हैं। मैं अपने आपको परम सौभाग्यशाली समझता हूँ।

जेल में जीवन-परिवर्तन

जिला कारागार, गोरखपुर में सन् 2004 से राजयोग प्रशिक्षण केन्द्र चल रहा है। प्रत्येक गुरुवार को वहाँ बाबा को भोग भी लगता है। गोरखपुर जेल को अति सेंसिटिव जेलों में से एक माना जाता है। सन् 2004 में वरिष्ठ जेल अधीक्षक बी.के. जैन ने मुझे 6 महीने का समय दिया और कहा कि इन कैदियों के जीवन में परिवर्तन करके दिखाइये। उस समय सिर्फ तीन कैदी भाइयों से सेवा शुरू की थी। तीन महीने के अंदर 25 कैदी भाई साप्ताहिक कोर्स कर नित्य मुरली क्लास में आने लगे। जहाँ हाहाकार था वहाँ जयजयकार और ओमशांति की धुन गूँजने लगी। अब 60 कैदी भाई नियमित आध्यात्मिक क्लास करते हैं, उनमें से 50 भाई ज्ञानामृत पत्रिका के सदस्य भी बने हैं। हर तीन महीने में एक लिखित परीक्षा लेकर उसे उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ में भी भेजा जाता है। पिछले 8 वर्षों में लगभग 600 कैदी भाइयों के जीवन में परिवर्तन आया है और कई कैदी भाइयों के अनुभव भी ज्ञानामृत में प्रकाशित हुए हैं। इन सबके जीवन को देखते हुए उत्तर प्रदेश शासन ने एक आदेश-पत्र द्वारा पूरे उत्तर प्रदेश की कारागारों में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सौजन्य से राजयोग केन्द्र चलाने का आग्रह किया है। वरिष्ठ जेल अधीक्षक एस.के. शर्मा तथा जेलर नौमीलाल ने मुझ निमित्त आत्मा को इसके लिए सम्मानित भी किया। वरिष्ठ जेल अधीक्षक महोदय ने कहा कि जेल प्रशासन में सर्विस करते हमने जेल में ऐसा परिवर्तन कभी नहीं देखा, जो यहाँ देखने को मिला है। ❖

तारा है तू गगन का

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

अंकुरण है तू बीज का
ज्ञान हुआ कल्प की हर चीज़ का

कोंपल है तू नये झाड़ की
शक्ति मिली धूप और छांव की

चमकता तारा है तू गगन का
हौसला है तू अमन का

छोटी-सी लहर से डरना नहीं
किश्ती से उतरना नहीं

हिम्मत बटोर और चढ़ना है आगे
तब नव-शक्ति मन में जागे

आयेंगे तूफान और उफान भी
यहाँ अपने भी, अनजान भी

माया से लड़ना तुम्हारा कर्म है
मेहनत के अलावा सब भ्रम है

आस कर मत किसी सहारे की
छत्रछाया है जब प्राण प्यारे की

सामना कर, हर मुश्किल से लड़
बुद्धि रूपी अंगुली ले पकड़

ज्ञानामृत का बहता रूहानी पानी
है आत्माओं के साहस की कहानी।